रामत्व

RAMNESS

पार्ट–1

प्रस्तुतकर्ता :–

रामराज्य आहवाहन मिशन

Website : www.ramrajyaahwahan.com
E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com

प्रमुख कार्यालय :
ए 1, बी 2, पुष्पा अपार्टमेन्ट– III, 44ए, राजेन्द्र नगर,
सैक्टर 5, साहिबाबाद जिला गाजियाबाद (यू0पी0)
फोन नं0 0120–6516399, 09313055063

! ठहरो !

धरती पर, दोबारा से **रामराज्य** जैसी
खुशियां लाने मे हमारा सहयोग करे।

रामराज्य आह्वान मिशन

वैबसाईट देखें :
www.ramrajyaahwahan.com

नोट : *आप भी राम हो सकते हैं, आप कहीं न कहीं के राजा हैं, आप किसी न किसी बात के धनी हैं, आप अपने परिवार या अपने व्यापार के राजा ही तो हैं, भगवान ने हर एक को बनाया है। अपना राज्य तथा अपना धन पहचानें और अपने राज्य को रामराज्य जैसा बनाकर, इस दुनिया में रामराज्य लाने में हमारा सहयोग करें।*

मिशन को जानने के लिए सम्पर्क करें।

A1 & B2, पुष्पा अपार्टमैंट–III, 44A, राजेन्द्र नगर, सैक्टर 5, साहिबाबाद, जिला गाजियाबाद
फोन नं0 : 0120–6516399, 9313055063
E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com

मिशन सोचता है कि परिवार एक राज्य ही तो है, व्यापार एक राज्य ही तो है इसका मुखिया एक राजा ही तो है। हर राजा अपने राज्य को ऐसे क्यों नहीं चलाता जैसे राम जी अपना राज्य चलाया करते थे जब आप ऐसा चाहने लगेंगे, तो आप राम जी की तरह राज्य करना सीख भी जाऐंगे ही एवं जब आप राम जी की तरह राज्य करना सीख जाऐंगे तो रामराज्य ही करेंगे और क्या करेंगे। आपको भी आनन्द आ जाएगा आपके परिवार को भी आनन्द आजाएगा और फिर धीरे-धीरे रामराज्य ही होगा आप शुरू करें तथा अपने राज्य में रामराज्य बनाऐं।

क्या हैं राम एक ऐसा नाम जिसे लेने से सोचना आ जाता है हर चीज का आनन्द लेना आ जाता है और इन्सान जीवन के महासुख में डूबता और डूबता चला जाता है उसे सारे सुख दुख बस राम की माया से लगने लगते हैं और वो उस माया को देख देखकर मजे लेने लगता है तथा सब उसको मजा लेते देखकर सब भी मजा लेने लगते हैं और इस प्रकार दुनिया शुरु होती है मजे की सब सुख दुख पीछे रह जाते हैं पता ही नहीं रहता है कहां है क्योंकि दिखाई तो सिर्फ मजा ही दे रहा होता है अब यह तो आपके राममय होने का गहरापन है आपके मजे में मजा लेने दुनिया का कितना बड़ा हिस्सा उमड़ पड़ता है। यह हैं राम, एक राम का नाम जो है नशा राम का वो क्या किसी जाम का सब बेकार पड़ जाते है।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

Type of a Human Beings

1. Welfare to others with loving.
2. Welfare to others without loving.
3. Loving attitude with no teasing to others.
4. No teasing to others without loving.
5. Teasing to others with loving.
6. Teasing to others without loving.

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

कमी सिखाने वाले में होती है सीखने वाले में नहीं यदि कोई सीख नही पा रहा है तो कहीं सिखाने वाले में कमी है जरुरत है उसे अपने सिखाने के तरीके में सुधार करने की।

अगर आपको सुख नहीं है तो जरुरत है सुख न होने

की वजह ढूंढने की तथा वजह को हल करना न आता हो तो जरुरत है उस वजह को हल करने के तरीके को ढूंढने की उसका साधन ढूंढने की यह निश्चित है ढूंढने पर ढूंढते रहने पर कभी न कभी तो हल मिल ही जाता है दुनिया में कुछ भी ऐसा नहीं है जिसका हल नहीं है कोई हल एकदम आसानी से मिल जाता है तथा कोई हल देर से तथा परेशानी से मिलता है। मगर हमारा फर्ज है हम ढूंढ़ने के रास्ते से भटके नहीं तथा अगर हम ढूंढ नही पाये हैं तो ढूंढना न छोड़ें जैसे ही समय मिले फिर ढूंढ़ना शुरु कर दें एक दिन आप पायेंगे कि हल मिल ही गया निराश कभी न हों ।

क्योंकि जब भाग्य बदलेगा तो हल अवश्य मिल जाएगा, इसीलिए कहते हैं कि निरन्तर प्रयास से कभी कभी या अकसर भाग्य भी बदल जाता है।

दोनो प्रकार का बदल जाता है सौभाग्य भी हो जाता है तथा दुर्भाग्य भी हो जाता है। अतः जिससे दुर्भाग्य बनता है उसे तुरन्त छोड दें या जैसे ही मौका लगे छोड दें दूसरी तरफ जिससे सौभाग्य बनता है उसे निरन्तर करते रहें या जैसे ही मौका लगे फिर करना शुरु कर दें।

ध्यान रखें सुख नहीं है तो गरियाऐं नहीं किसी को भी सिर्फ सुख न होने की वजह या सुख ला सकने का तरीका ढूढें यही + ve नजरिया है और यह उस ही

का कर्तव्य है जिसे सुख चाहिए या जिसे सुख देना है या जिसे सुख लेना है, यह जिम्मेदारी हर एक की है कोई यह न सोचे की यह तो सुख देने वाले की जिम्मेदारी है या यह तो सुख चाहने वाले की ही है यह सही मायने में हर एक की है।

तथापि यह जिम्मेदारी सबसे ज्यादा राजा की अर्थात मुखिया की ज्यादा है क्योंकि वह समर्थ है उसको विषयों का ज्यादा ज्ञान है वह हल आसानी से ढूंढ सकता है या हल ढूंढ सकने में दूसरों की मदद कर सकता है।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

सम्बन्धों को अच्छा तथा मधुर बनाए रखना बड़ा कठिन माना जाता है मगर दूसरी तरफ से देखा जाए तो बड़ा आसान भी है। क्योंकि मात्र दुसरे की बुरी बातों को नजरदांज ही तो करना होता है तथा अच्छाईयों पर अर्थात उसके द्वारा किए गए अच्छेपन पर ध्यान देना होता है। ऐसा तो कहा ही जाता है जिस पर विचार करोगे वही रह जाएगा। अर्थात अच्छी बातों पर ध्यान दोगे तो धीरे–धीरे अच्छी बातें ही रह जाऐंगी तथा बुरी बातें महत्वहीन हो जाऐंगी।

दूसरी तरफ आप तो हर एक का सिर्फ अच्छा ही सोचो सोचो कि क्या करें भाई बुरा करना तो हमें आता ही नहीं जब आता ही सिर्फ अच्छा करना है तो वही तो करेंगे। हम तो भाई सिर्फ दूसरे का भला ही सोचेगें अब

दूसरा जो भी समझे।

बस यही है तरीका जीवन को आसान बनाने का तथा बुरेपन से अच्छेपन की तरफ ले जाने का तथा दुखों से सुखों की तरफ ले जाने का ।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

हमें हर अपनी चीज के प्रति ऐसा भाव रखना चाहिए कि आ हा मेरी गाड़ी, मेरा घर, मेरे कपड़े आदि, आजा गन्दा हो गया ला तुझे साफ कर दूं, तुझे क्या खिला दूं आय हाय तुम्हारे लिए क्या करुं। इस तरह फैलेगा प्रेम का व्यवहार सभी के बीच में आपके प्रति प्रेम तथा आपका और सबका आपके साथ प्रेम।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

माता पिता जरुरी नहीं है अच्छे सलाहकार ही हों मगर निश्चित रुप से सम्मानीय हैं पूजनीय हैं अगर वे अच्छे सलाहकार नहीं है तो आप अच्छा सलाहकार ढूढ़ें अब आप समझदार हैं नहीं कैसे तय करेंगे कि कौन अच्छा सलाहकार है तथा कौन नहीं। सीधा सा तरीका है आपके जिस कार्य से आपको दुआ मिलने की उम्मीद है वह अच्छी सलाह है तथा जिससे बददुआ मिलने की आशंका है वह गलत तथा बुरी सलाह है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

दुखों को जीने के 2 ही तरीके होते हैं या तो दुखी–दुखी दुखों को जी लो या खुशी–खुशी दुखों को जी लो जब जीना ही है तो खुशी–खुशी ही क्यों न जीयो राम जी और करते ही क्या थे। बस दुखों को

खुशी–खुशी जीते थे तथा बस निरन्तर दुखों के आने पर एक समझदार आदमी को जी कुछ करना चाहिए वो करते रहते थे। और धीरे–धीरे दुख दूर हो जाता था तथा फिर सुखों का आनन्द।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

अगर आप देखें तो बड़े लोग हैं ही वो जो नुकसान उठाना जानते हैं अर्थात नुकसान बर्दाश्त करते रहते हैं तथा आगे बढ़ते रहते हैं। जितने ज्यादा बड़े होंगे उतने बड़े नुकसानों को सहने की तुम्हारी क्षमता होनी चाहिए। अगर देखें तो बड़े लोगों का कुछ और काम ही नहीं होता है सिर्फ यही होता है अपने नुकसानों को सुनना उन पर मिट्टी डालना तथा सबको आगे बढ़ने का निर्देश देना। देखा जाए तो लोग आपसे मिटिंग करते ही इसलिए हैं कि वे आपको बता दें कि उन्होंने आपका इतना नुकसान कर दिया है तथा आप उन्हे क्षमा कर दें ऐसा है बड़प्पन।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

अगर आप देखेगें तो पाऐंगे कि स्त्री के गुण तथा भगवान के गुणों में काफी हद तक समानता है अगर आप भगवान को जानना चाहते हैं तो आपको स्त्रियों के बीच में रहना होगा तथा स्त्रियों से सीखना होगा तथा स्त्रियों सा बनना होगा, उन जैसा अपने को सजाना संवारना, उन जैसा प्यारा सा सोचना, उन जैसा ममत्व रखना, उन जैसा देखना, उन जैसा कोमल बनना, उन जैसा मिलनसार होना बस आप पाऐंगे कि आप भगवान के कितने करीब हो गये हैं।

उन जैसा बातें करना अर्थात आप उन्हें अच्छे लगें।

बस भगवान वो हैं जो दोनों ही अपने में रखते है पुरुष जैसी ताकत व स्त्री जैसी कोमलता, वे रहते हमेशा स्त्री की तरह हैं मगर कर्म पुरुष की भांति करते हैं। मैं समझता हूँ कि आप जीवन का आनन्द उठाऐंगे जब जीवन को स्त्री की भांति जिऐंगे तथा दूसरों (क्योंकि वे सब भगवान हैं और भगवान को यही पसन्द है) के साथ स्त्रियों जैसा व्यवहार रखेंगे मगर अपने साथ व्यवहार पुरुषों जैसा करेंगे क्योंकि आप पुरुष है।

समन्वय बनाऐं बड़ी समझदारी से तथा जीवन का लुत्फ एवं आनन्द उठाऐं।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

मैने सोचा कि हमने जब दुनिया में जन्म लिया है तो हमें दुनिया का सबसे अच्छा सुन्दर बढ़िया इन्सान बनना चाहिए मैने खूब विचार किया तो या भगवान राम जी की हनुमान जी की शायद कृपा हो गयी और मैंने पाया कि दुनिया में राम एक सर्वोतम पुरुष हैं अर्थात अगर राम बन जाया जाए तो ऐसा हो सकता है और मैंने राम को पढ़ना राम को जानना, राम को समझना व राम का अभ्यास करना शुरु कर दिया तथा भगवान मदद कर रहे हैं और देखा जा सकता है कि सुधार हो रहा है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

संसार में 2 प्रकार के सुख होते है एक तो सांसारिक

सुख तथा दूसरा सच्चा सुख। सांसारिक सुख लधुकालीन (**short term**)है अर्थात आज का मजा है तथा कल की परेशानी दुख। सच्चा सुख दीर्धकालीन (**long term**)है जो हमेशा सुख देता है तथा सुख को परलोक तक लेकर जाता है।

सांसारिक सुख है इस संसार की वस्तुओं का भोग–विलास जैसे खूब तरह–तरह के व्यंजन उढ़ाना मजे ले लेकर विलीसिता पूर्ण चीजों को विलारिता पूर्वक भोगना, स्त्री भोग विलासिता पूर्वक बस सीधी सी बात है विलासिता का विलासितापूर्वक भोग विलास, अति निंद्रा भोग (नींद का लेना) सांसारिक सुख है।

सच्चा सुख है सभी चीजों का जरुरत से थोड़ा कम भोगना तथा इस प्रकार से मन को संयमित करना अर्थात जरुरत से थोड़ा कम बोलना, जरुरत से थोड़ा कम पहनना आदि। जो व्यक्ति ऐसा करता है वह कभी बीमार नहीं होता, लोगों द्वारा निंदित नहीं हमेशा सभी के द्वारा प्रशंसनीय रहता है तथा इस जीवन को सफल कर लेता है।

आज के समय को देखते हुए एक अच्छा इंसान बनने हेतु आदमी का फर्ज है कि दोनों प्रकार के सुखों को सन्तुलित करके चले एवं जीवन का आनन्द उठाऐं।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

कल्पित भय बहुत ही भयानक चीज है यह मनुष्य को

जीते जी मार देता है। जब आदमी पर जरुरत से ज्यादा माया होती है या आदमी भविष्य में आ सकने वाली जरुरतों को पूरा करने की कोशिश में लग जाता है तो विभिन्न प्रकार के कल्पित भय होने शुरु हो जाते हैं जिनका कोई निदान नहीं होता जिनका कोई अन्त नहीं होता तथा आदमी जीते जी मर जाता है। माया बस यही करती है तमाम प्रकार के कल्पित भय उत्पन्न करती रहती है तथा यही कहलाता है माया का मनुष्य को नचाना। माया को तो भगवान ही संभाल सकते हैं क्योंकि वे ही जानते है माया होते हुए भी उसका जरुरत से थोड़ा सा कम भोग करना तथा बाकी माया को एक तरफ पड़े रहने देना अर्थात उससे विरक्त रहना मगर माया को नहीं लगता कि वे उससे विरक्त है क्योंकि अगर माया को लगेगा कि भगवान उससे प्रेम नहीं करते तो माया का मन दुखी होगा। भगवान तो किसी को भी दुखी नहीं करते तो वे माया को भी क्यों दुखी करेंगे।

ध्यान रखें यही है सद–व्यवहार जो माया के साथ होना चाहिए।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

रामराज्य में राजा बस प्रजा की खुशी में खुश रहता है अर्थात प्रजा के जीवन में दखलंदाजी नहीं करता है उस का मार्गदर्शन करता है, उसे प्रशिक्षित करता है तथा उन्हें खुश होता देखकर खुश होता है मगर अपनी खुशी की परवाह नहीं करता बस यही फर्क है। रामराज्य में

तथा साधारण राज्य में इस ही वजह से रामराज्य सबसे समृद्ध एवं खुशहाल राज्य है।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

प्रेम – प्रेममय होने के कुछ मूलभूत सिद्धान्त है।

1. आप जिसे खिलाओगे पिलाओगे उसमें आपके प्रति प्रेम पैदा होगा। अगर अपने हाथ से बनाकर खिलाओगे और भी ज्यादा होगा अगर अपने हाथ से खिलाओगे तो और भी ज्यादा प्रेम पैदा होगा।
2. उपहार देने से भेंट देने से प्यार बढ़ेगा।
3. किसी को हंसाओगे किसी के दुख दूर करोगे, किसी की मदद करोगे तो प्रेम बढ़ेगा।
4. अगर आपको लोगों का प्यार पाना है तो अपने पास खूब सारे उपहारों का कलैक्शन रखें और यथोचित बॉटते रहें।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

रामराज्य क्या है? रामराज्य एक ऐसा राज्य है जहां पर राजा प्रजा को नहीं, प्रजा और प्रजा ही क्यों बल्कि अपने परिवार अपने शासकीय अधिकारियों के मनों को पालता है अर्थात उनके मनों का पालना पोषण करता है। जब प्रजा राजा को खूब लगान देती है, खुब कमवाती है तो राजा अर्थात अपनी खुशी को महत्व नही देता है बल्कि इस बात से खुश होता है कि उसकी प्रजा अच्छी हो गयी है कि खूब लगान दे पा रही है। वह प्रता को ऐसे प्रशिक्षित करता है कि प्रजा के मन करते ही नहीं कुछ अनुचित करने को या उन्हें रास्ता ही एक जो उचित है वही समझ में आता है। अर्थात रास्ते पर जगह–जगह पर उचित मार्ग दर्शन की उपलब्धता, अनुचित

कार्यो के परिणाम जो पूर्णतः वर्णित होते हैं तथा अनुचित कार्यो के दण्ड भी ऐसे होते है कि वह उस एक दण्ड को भोगकर स्वतः ही उचित मार्ग पर पहुचते हैं न कि दण्ड भोगकर वे खुले हो जाऐं। अनुचित कार्य करने के लिए। राजा हमेशा हर एक के प्रति अपना मन साफ तथा सिर्फ उचित ही रखता है तथा ऐसा नहीं करता कि अनुचित के साथ अनुचित कर दे राजा के कार्य तो सिर्फ उचित ही कार्य होते है। वह अनुचित के साथ भी उचित ही करता है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

प्यार को कभी भी लड़कर हासिल नहीं करना चाहिए। उससे प्यार नहीं आता बल्कि और दूर हो जाता है।

Tc किसी का प्यार पाना हो तो तुम्हें बस उसको प्यार करना होता है और इस कदर करना होता है कि दीवाना बन जाता होता है और इतना ज्यादा कि दूसरे से प्यार किए बिना रहा ही नहीं जाता प्यारी सी चीज को कौन प्यार नहीं करता सभी करते हैं बस हमे इस कदर प्यारा सा हो जाना होता है।

प्यारा सा होने के लिए आवश्यक है इस बात की जरा सी भी जगह न होना कि हम तो इसे प्यार कर रहे हैं और ये मान ही नहीं रहा कि हम इसे प्यार कर रहे हैं इसमें तो करना होता है अथाह समर्पण यही जन्म देता है सच्चे प्यार को और प्यार के आनन्द को।

ये तो सभी जानते है कि प्यार लड़कर हासिल नही

किया जा सकता है वह तो हो जाता है जब आप किसी को अथाह प्यार देते रहेंगे तथा अथाह माफी देते रहेंगे।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

आदमी क्या करे कि उसे दुनिया प्रेम करे : – 4 बातें है।

1. प्रेम करना तथा प्रेमिका को लगना कि तुम उसे प्यार करते हो।
2. प्रेम न करना मगर प्रेमिका को लगना कि तुम उसे प्यार करते हो।
3. प्रेम करना तथा प्रेमिका को न लगना कि तुम उसे प्यार करते हो।
4. प्रेम न करना तथा प्रेमिका को भी न लगना कि तुम उसे प्यार करते हो।

(1) ही प्रेम का सर्वोतम रुप है भगवान की तरह से (3) भी बड़ा प्यारा तथा दया का पात्र है मगर प्रेमी बड़ा दुखी एवं बेचारा सा रहता है। (2) ही आजकल कलयुग में ज्यादातर है तथा सभी प्रकार की प्रेमिका की जिन्दगी में आने वाले क्लेशों की जड़ है। प्रेमिका का स्वभाव बहुत ही दरियादिल होता है। (4) से भी दुनिया में कोई दिक्कत नहीं है मगर रुखापन है जीवन का आनन्द नहीं है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

इन्सान को हमेशा अपना अच्छा भाग्य लिखने की कोशिश करनो होती है हो सकता है आपके भाग्य में वही लिखा हो । अतः निरन्तर कोशिश करते रहें यह न

सोचें कि हमारे भाग्य में तो है ही नहीं।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

राम कौन हैं जिसमें रामपन हो वही राम है। चाहे वो कृष्ण है, चाहे बाहे गुरु हैं चाहें अल्लाह है या ईसा मसीह हैं या महात्मा गाँधी या सॉई हैं, क्योंकि जहाँ रामपन है बस वहीं राम, ईश्वर तथा परमात्मा है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

एक आदमी को दूसरे आदमी के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए जैसा कि एक राजा दूसरे राजा के साथ करता है। रामराज्य में तो हर व्यक्ति कही न कहीं का राजा है। कोई छोटे राज्य (घर) का राजा है कोई बड़े राज्य का राजा हें बस इतना फर्क है। मगर राजाते है अतः व्यवहार राजा जैसा होना चाहिए।

अगर किसी ऐसे के साथ व्यवहार हो रहा है जैसे बच्चा तो कोशिश करनी चाहिए कि उसका भी कोई छोटा सा साम्राज्य बनवाया जाए ताकि वो भी राजा होने का आनन्द ले सके जब आप ऐसा विचार व्यवहार रखते हैं तो इसका आनन्द देखें क्या आनन्दायक है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

मै तो सिर्फ भला करता हूँ सभी का। सभी का चाहें कोई मेरे से छोटा है चाहें बड़ा है चाहें किसी भी लेवल पर है मुझे सिर्फ भला करना होता है यथासंभव बिना इसको देखे कि दूसरा मेरे साथ क्या करता है क्योंकि इससे कोई फर्क नहीं पडता है क्योंकि मेरे साथ तो जो होता है चाहे अच्छा चाहें बुरा सिर्फ भगवान करते हैं। कोई

दूसरा नहीं करता हर एक में भगवान ही तो हैं। यही सिद्धान्त है जो आपको राम बनाता है।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

तुम भगवान को खुश करो भगवान आपको खुश करेंगे। भगवान को कैसे खुश किया जा सकता है भाई भगवान के बन्दों को खुश करो, भगवान खुश हो जाऐंगे। भगवान के बन्दे कौन हैं सभी जीव सभी तो भगवान के बन्दे हैं।

भगवान के बन्दों को कैसे खुश किया जा सकता है तुम उनके मनों को खुश करो और आनन्द तथा खुशी पाओ भगवान देंगे। एक प्रयास करो।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

राम तो ऐसे हैं जो बेवजह ही सबका भला करने लग जाते हैं। जब ऐसा हो जाएगा आप यह सीख जाओगे तो आप राम ही हो जाओगे आप में और भगवान में कोई अन्तर नहीं रह जाऐगा। तथा भगवान कृतघ्न होंगे। क्योंकि यह होगा भगवान का सच्चा काम जो आपको भगवान का निजी जन बनाऐगा क्योंकि आप भगवान का काम कर रहे है तथा आप भगवान के निजीजनों के अधिकार पाने के योग्य हो जाऐंगे। अतः आप बेवजह लोगों का भला करें तथा पाऐं भगवान का प्यारा सा प्यार एवं दुलार।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

विश्वासघात वहीं होता है जहां विश्वास होता है मतलब यह नहीं है कि विश्वास नहीं होना चाहिए मगर विश्वास

दिखाने के लिए जरुरी है करते हुए हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि विश्वासघात न हो जाए। अगर हम धोखा खाते हैं तो हम बुद्धिमान नहीं हैं या कहें बेवकूफ हैं। हमारी गलती है, विश्वास घात करने वाले की नहीं।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

दूसरों का भला करना अच्छी ही बात है क्योंकि आपका भला तभी होगा जब आप दूसरों का भला करेगें मगर आप अपने भले की कामना न करें अन्यथा दुख हो सकता है अतः भला उतना करें। जितना दरिया में डाल सकते है ठीक उसी प्रकार दुसरों को सुख पहुँचाना तथा खुश करना आदि है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

हमेशा ध्यान रखें कि अगर चोरी की गुंजाईश है तो चोरी हो ही सकती है। अगर नहीं होती है तो यह चोर की बेवकूफी है आपकी होशियारी नहीं। आप होशियार बनें बेवकूफ नहीं। चोरी की गुंजाइशों को यथा सम्भव खत्म करते रहें तथा आनन्द लें। न्यूनतम चोरियाँ हों यह ध्यान रखें अगर आप चोरी हो सकने की गुंजाइशे छोड़ रहे हैं। तो आप चोर के चोरी के रास्ते पर चलने में बढ़ावा दे रहे हैं तथा इस पाप के भागीदार हो रहे हैं। अगर आप सावधान रहते तो चोर चोरी करने के पाप से बच जाता। अगर आपकी असावधानी की वजह से चोर चोरी कर पाया तो चोर के चोरी करने के पाप कों तुम भी भागीदार हो। अतः सावधान एवं सतर्क तो रहना ही होता है मगर प्यार तथा विनम्रता के साथ।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

राम जी तो एक ऐसा समुन्दर है जिसमें उपर लिखे जैसे

हजारों करोड़ों मोती भरे हुऐ पड़े है जब आप राम को अपने साथ लिए घूमते हैं तो इतने बडे सेठ हैं। क्योंकि राम रूपी अच्छे चरित्रों का समुद्र अपने साथ लिए हुए धूम रहे हैं समुन्दर में मैं गोता लगाता हुँ और एक मोती उठा लाता हूँ यह राम जी की इच्छा है कि कब मेरे हाथ में वे कौन सा मोती दे देते हैं। मै वो मोती हाथ में लेकर खुश होकर घूमता रहता हूँ। हे प्रभु तुमने तो मुझे मानसरोवर का हंस बना दिया।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

मुझे कभी–कभी बहुत दुख होता है कि हमारा अच्छापन दूसरों के अच्छेपन का मोहताज क्यों है अर्थात अगर दूसरा अपना अच्छापन छोड़ दे तो हम एक दम बुरे हो जाते हैं। हम अच्छे बनें बिना इस बात को देखें कि दूसरे अच्छे हैं या बुरे हैं तभी आप अच्छे है अन्यथा आप अच्छे होने का सिर्फ ढ़ोंग कर रहे हैं।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

अन्त भला तो सब भला अर्थात आपका कार्य या प्रयास ऐसा होना चाहिए कि सभी का भला हो। ऐसा नही कि एक का तो भला हो जाए तथा दूसरे का बुरा हो जाऐ। आप तो काम को ऐसे करें जिससे सभी का भला हो आपका भी, आप जिसका काम कर रहे हो उसका भी तथा जिससे काम करा रहे हो उसका भी। आप विचार करें ऐसा निश्चित रुप से ऐसा भी रास्ता होता है आप विश्वास रखें और दिमाग लगाऐं जब आप सभी का भला करेंगे तो राम कहलाऐंगे।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

धर्म क्या है धर्म है वह जो कि किसी को उस समय के

अनुसार उस स्थिति तथा परिस्थिति के अनुसार, जिसमें वह है, जो हर क्षण हर प्रतिक्रिया के साथ बदलती रहती है, व्यक्ति को भगवानी नजर से शास्त्रानुसार जो करना चाहिए, वही धर्म है।

कभी–कभी कई–कई स्थितियाँ परिस्थितियां एक साथ होती हैं तो उसे उन सबके धर्मो में से बैस्ट (सर्वोतम) चुनना होता है तथा उनको बैलन्स (सन्तुलित) करना होता है इसी वजह से श्री कृष्ण को छलिया जैसा शब्द सुनना पडता था क्योंकि सब लोग कई बार सभी स्थितियों परिस्थितियों को देख नहीं पाते थे। जिससे उन्हें ऐसा लगता था कि उन्हें छला गया है जबकि वह मात्र स्थिति–परिस्थिति बदलने की वजह से श्री कृष्ण जी की सलाह बदलती थी।

अधर्म क्या है जो धर्म नहीं है वही अधर्म है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

अपने मन को तथा औरों के मन को निरन्तर साफ करते रहना चाहिए जो कि सच बताने से होता है जब मन साफ हो जाता है तो सच्चा प्रेम उत्पन्न होता है।

एक और बात है कि कभी–कभी हम कर तो मन साफ रहे होते हैं मगर या तो मन साफ नहीं होता या और गन्दा हो जाता है बजाय साफ होने के जो कि आप बता तो रहे थे कुछ और मगर दूसरा समझ रहा है कुछ और से होता है । यह होती है भगवान की दखलंदाजी जिस

पर आपका बस न तो चलता है, न चल सकता है बुरा न मानें ऐसे समय पर जब समय खराब है अपना तब समझाना सच बताना रोक दें क्योंकि मन के गन्दे हो जाने से तो अच्छा है कि ये जैसा है वैसा ही रहे तथा फिर समय का इन्तजार करें तथ पुनः समझ पाने की हिम्मत तथा योग्यता जुटाएं तथा फिर अपने काम में लग जाऐं अगर फिर भी वैसा ही होता है तो फिर रुक जाऐं तथा फिर से हिम्मत जुटाऐं। कई बार हमें समझाना भी नहीं आता है तो इसका सुन्दर तरीका सीखें क्योंकि इस पर विचार करने से तथा किसी ऐसे व्यक्ति को देख–देखकर सीखने से जो ऐसा सुन्दर है हम अपनी इस कला में अवश्य पारंगत हो जायेगें। आप सच बताते तथा समझाते रहे और लोगों का सच्चा अपनापन प्रेम पाते रहें। जब आप मनों की सफाई के काम में पारंगत हो जाऐंगे तो आप ही भगवान कहलाऐंगे। यही तो राम है। आप अभ्यास करें तथा अपने इस सुन्दर कार्य में जो आपकी दुनिया को सुन्दर तथा प्रेममय बना देगा जुट जाऐं।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

'शरीर' तथा 'मन' दो चीजों को मिलाकर ही इन्सान बना है मन ही भगवान है यही भगवान का अंश है आप जितना अपने तथा दूसरों के मन को खुश करते हैं उतने ही भगवान खुश रहते हैं तथा (मगर) मन को खुश रखते हुए ध्यान रखना आवश्यक है कि ऐसा न हो कि आज तो मन खुश हो जाए मगर इसकी वजह से बाद में मन को दुखी होना पड़े तथा ऐसा भी न हो कि

आपका मन तो खुश हो जाऐ मगर औरों का मन दुखी हो जाए। आपको देखना है ज्यादा से ज्यादा मन तथा मनों की खुशी कुल मिलाकर । क्योंकि आज का मन कल का मन, मेरा मन तथा औरों का मन सब मिलाकर ही तो भगवान (सम्पूर्ण भगवान श्री सच्चिदानन्द) हैं क्योंकि कि ये सब मन उन्हीं का अंश है। जिसका भी खुशी या दुख आंकना है वही कुल मिलाकर आंके, यही जीवन की सफलता या असफलता है। हमेशा सन्तुलन बनाते रहें तथा बनाऐं अत्यधिक मनों की खुशी कुल मिलाकर। इसे लाने को प्रयास करें। बस यही है पैमाना अपने जीवन की सफलता या असफलता को नापने का आपसे भगवान जीवन में कितने खुश हुए बस यही है पैमाना इसको नापने का। आपने कुल मिलाकर अपना मन, औरों का मन, कल का मन कितना खुश किया तथा कितना दुखाया मतलब आपने भगवान को इतना खुश किया इतना दुखी किया बस यही है पैमाना।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

जो पैसे का अपने धन का प्रयोग केवल अपने सुख के लिए तथा अपने ही उपभोग के लिए करता है वह असुर है तथा यही असुरता है धन–पैसा, सामग्री, दास दासियां आदि।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

स्त्री जो भी इसको सच्ची शरण देता है ये उसी की हो जाती है मन से जब कोई इसको मौत के मुहँ से बचाता है तथा इसकी रक्षा करता है तो मन से ये अपने को उसकी पत्नी मान लेती है। और प्रयासरत हो जाती है

किसी प्रकार वह उसे अपनी पत्नी बना ले। क्योंकि स्त्री हमेशा एक अच्छे संरक्षक की छत्रछाया मे रहना चहती है।

दूसरी तरफ समाजिक दृष्टि से जो पति पत्नी बनते हैं अगर पति अपनी पत्नी को सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदान नहीं करता है सुरक्षा लाज की, प्राण की, सम्मान की, सुखों की, सबसे ज्यादा प्राण की अगर नहीं करता है तो मन से वह उसकी पत्नी नहीं रहती है तथा दुखी रहती है कि वह कैसे पति के पल्ले पड़ गयी है तथा दुखी रहती है एवं भगवान से शिकायत करते हुए जीवन गुजारती है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

इन्सान को अपनी जिम्मेदारियों को खुद ही निभाना होता है उन्हे किसी दूसरे पर नहीं छोडना होता है जहां वह इनको किसी और पर छोड़ देता है वहीं गडबड हो जाती है क्योंकि हो सकता है दूसरा किन्हीं परिस्थितियों वश जिम्मेदारियों को न निभा पाये हो सकता है किसी मजबूरीवश दुसरा गैर हो जाए तो आपको मजबूरीवश गैर जिम्मेदार कहलाना पड़ेगा।

आप अपनी जिम्मेदारियों को निभाने में दूसरों की मदद लें मगर जिम्मेदारी अपनी ही मानें दूसरे की नहीं इसी से आप एक आदर्श व्यक्ति रह पाऐगें। ऐसे ही भगवान की भी मदद लें मगर अपनी जिम्मेदारी का बोझ उनके ऊपर न डालें।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

पैसा हमेशा मेहनत का ही लेना चाहिए। खैरात का नहीं वह भीख है कोई भी पैसा जो आपने बिना मेहनत के पाया है वह खैरात या भीख ही है चाहे उसे भगवान ने ही क्यों न दिया है अगर दे दिया है तो उसको बराबर करने के लिए बाद में मेहनत करें मेहनत व पारिश्रमिक का समन्वय आवश्यक है भीख दुखदायी है यह आपको आलसी तथा नाकारा बनाती है जो आपको या आपके वंश की जीते जी मार देती है।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

प्यार मोहब्बत भी वही अच्छी लगती है जो सुख देती है अगर प्यार मोहब्बत दुख देती है तो ऐसी तो प्यार मोहब्बत भी अच्छी नही लगती है।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

जीवन में हजारों रिश्तों के अलावा दो महत्वपूर्ण तथा प्रधान रिश्तें भी हैं जिन पर या जो सभी रिश्तों की जड़ हैं वह है प्रेम (प्यार) का रिश्ता एवं इज्जत का रिश्ता अगर आप यह 2 रिश्ते सही से निभाते हैं तो सभी रिश्ते मधुर एवं मजबूत हो जाऐगें तथा अगर ये सही से नही निभाए जाऐंगे तो सभी रिश्ते निरर्थक एवं कमजोर हो जायेंगे।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

आज जरुरत है सोचने कि जब श्री राम ने जन्म लिया तो उन्होनें अपने जीवन में ऐसा क्या काम किया कि वे एक साधारण पुरुष से भगवान श्री राम की श्रेणी में आ गये यही हम रामायण से जान पाते हैं। और जब ऐसा व्यवहार करते हैं जैसा व्यवहार श्री राम ने किया तो हम

एक सामान्य इन्सान (या कुपुरुष, असफल पुरुष सहित आदि) से एक राम जैसे इन्सान जो समाज में सभी के द्धारा सम्मानीय दृष्टि से देखा जाता है तथा एक सफल इन्सान भी होता है के मार्ग पर धीरे–धीरे अग्रसर होने लगता है। बस यही एक सच्ची सफलता की कुंजी है जो श्रीराम की कृपा से अर्थात श्रीराम के संग अर्थात सच्चे सत्संग से प्राप्त होती है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

एक बार भगवान से पूछा कि प्रभु आपकी नजर में दुखी कौन है तो प्रभु ने कहा गरीब तथा सुखी कौन है प्रभु ने कहा सत्संगी। अतः कहा जा सकता है मैं तो सुख के मार्ग पर अग्रसर हूँ क्यों कि मुझे श्री राम की कृपा से सत्संग प्राप्त हो गया है श्री राम का संग अर्थात दुनिया का सर्वोत्तम संग। श्री राम ने मुझे दुखी होने से भी बचा दिया है क्योंकि मै गरीब तो नही हूँ अर्थात चाहे अमीर नही हूँ मगर गरीब भी नही हूँ।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

जब से पुरुष शादी करता है तो वह गृहस्थ धर्म में प्रवेश करता है। उस ही दिन से कहा जा सकता हे वह एक अपना संसार (नया राज्य) बनाता है तथा उसकी नींव रखता है। हर गृहस्थ को अपनी गृहस्थी ऐसे निभानी होती है जैसे कि एक क्षत्रिय को। हर गृहस्थ एक क्षत्रिय है जो अपने गृहस्थी रुपी राज्य की सीमाऐं दिन प्रतिदिन बढाता है और उसे समृद्ध बनाता है तथा जिम्मेदारी लेता है। उसे अपनी पत्नी, बच्चों को समृद्ध, सुन्दर, सुन्दर मन वाला बनाना होता है और यह सब

केवल उसकी ही जिम्मेदारी होती है। जैसे एक क्षत्रिय को युद्ध के मैदान में प्रवेश करने के बाद पीठ दिखाने का अधिकार नहीं होता है ठीक इसी प्रकार गृहस्थ को अपनी गृहस्थी को अर्थात पत्नी, बच्चे जो उसे भगवान ने दिये हैं को पीठ दिखाने का अधिकार नहीं होता है तथा उन सभी लोगों के मन को जीतते हुए उन्हें प्रशिक्षित करते हुए अपने मन में उनके प्रति स्नेह रखते हुए बिना किसी द्वेषभाव के उनको बिना पीठ दिखाऐ सफल बनाना होता है और यदि गृहस्थ को यह सब नहीं आता है तो उसे ऐसा सब करना तथा ऐसा सब निभाना सीखना होता है। निष्कर्ष है कि पुरुष को जो पत्नी मिली, जैसे जो बच्चे मिलते है चाहे वे गन्दे, चिडचिडे, अपंग आदि होते हैं पर फिर भी प्यारे होते हैं और उन्हें छोड़ने की बात आपके मन में आती भी नहीं है क्योंकि यह सब तुम्हें भगवान ने दिया है, उसको कभी न तो छोडना और न ही छोड़ने की सोचना होता है बल्कि उनके प्रति प्रेमपूर्वक उनको सुन्दर समझदार खूबसूरत तथा प्यार सा बनाना होता है। यह सिर्फ तुम्हारी (गृहस्थ) की जिम्मेदारी होती है। ठीक ऐसे ही जैसे क्षत्रिय धर्म में (युद्ध में पीठ नहीं दिखायी जाती है परेशानियों से ऐसे ही लड़ा जाता है कि सिर कटा सकते हैं लेकिन सिर झुका सकते नहीं) फिर देखो आपकी गृहस्थी कितनी प्यारी सी होगी तथा गौरव से परिपूर्ण होगी।

अतः कभी भी पत्नी को यानि कि जिम्मेदारी जो भगवान

ने तुम्हें दी है किसी भी हाल में नहीं छोड़ना होता है। क्योंकि यह तुम्हारी गृहस्थी का आधार है।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

सुन्दरता: यह होती है तन की एवं मन की। तन की सुन्दरता मन की सुन्दरता से प्रभावित होती है। जब आप किसी सुन्दर मन को देखते हैं तो तन (चाहे सुन्दर भी नहीं है) धीरे–धीरे सुन्दर लगने लगता है अर्थात तन की सुन्दरता प्रभावहीन हो जाती है। अगर आपकी पत्नी का तन औरो की तुलना में सुन्दर नहीं है तो शायद यही वजह है कि कहीं उसके मन की सुन्दरता में कुछ कमी है जिसकी वजह से आपको ऐसा लगता है उसके मन को सुन्दर बनाने के प्रयास में लग जाऐं वह आपको प्यारी लगने लगेगी।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

मैं तो हर समय राम रुपी घोसले (कोठरी) में पड़ा रहता हूँ तथा कुछ काम करना होता है तो निकल आता हूँ। तथा कुछ मजा लेना होता है तो मजे लेने आता हूँ मजा लेता हूँ और फिर घुस जाता हूँ। रहता तो हर समय मैं राम में ही हूँ।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

नफरत : हमेशा ध्यान रखें अपने में कभी भी किसी के भी प्रति थोडी सी भी नफरत न पलने दें। अगर नफरत पलती है तो यह तो बडे–बडे साम्राज्य खत्म कर देती है। कभी न सोचें सही तो है ये है ही नफरत के लायक इसीलिए तो हम उसके प्रति नफरत करते हैं। नहीं नफरत तो चाहें सही हो या गलत यह तो गलत ही है।

यह नकारात्मक उर्जा पैदा करती है। आप और ज्यादा अगर भगवान की सेवा पाना/करना चाहते हैं तो हमेशा अपने आस पास इधर-उधर ध्यान रखें कही किसी में किसी के प्रति नफरत पल तो नहीं रही है हमेशा ध्यान रखें अगर ऐसा है तो इसको मिटाते, साफ करते रहें तथा बढाऐं तो बिलकुल नहीं जब आप यह करना शुरु कर देंगे तो एक दिन अवश्य ही इस कार्य में भी आप पारंगत हो जाऐंगे फिर आप में तथा आपके आस पास सिर्फ स्वर्ग होगा। यही भगवान की सच्ची सेवा है आज से ही लग जाएं बहुत आसान है बिना पैसे का कार्य है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

नासमझी : हर किसी को नासमझी करने का अधिकार है तथा नासमझ को समझदारी सिखाना तो अच्छी बात है मगर नासमझी न सहना एक बुरी बात है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

आप देखेगें कि पत्नियां पति की शारीरिक सुन्दता ज्यादातर कभी नहीं देखती हैं बस उसके अच्छेपन अर्थात सिर्फ मन की सुन्दरता से ही खुश हो जाती हैं तथा इस आधार पर ही सर्व समर्पित रहती हैं। यह तो सिर्फ पति ही है जो तन की सुन्दरता देखता है। पति पत्नी के जैसा या पुरुष स्त्री जैसा सुन्दर मन का क्यों नहीं होता है। पत्नी बस पति की बुरी आदतों से घृणा करती है पति से नहीं, जैसे शराब पीना पीटना, लाटरी या जुऐ में पैसा लुटाना आदि।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

हम किसी को समझाते हैं अच्छी बात है मगर जरुरी तो

नहीं है कि जो हम किसी को समझाऐं वह उसे अवश्य समझे इसके लिए जबरदस्ती करने की क्या जरुरत है हो सकता है उसे तुम्हारी बात सही न लग रही हो। इन्तजार करें कि उसे तुम्हारी बात सही लगे।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

हर समस्या का सुन्दर सा हल भी होता है। सुन्दर सा हल निकालें तथा खोज करें। समस्या का गन्दा सा हल निकाल लें यह बुरी बात है यह ऐसा ही है पहले गुस्सा करना फिर पछताना। अब आप समस्या का सुन्दर सा हल नहीं निकालेगें तो पता नहीं किस–किस का नुकसान होगा। नुकसान को ज्यादा से ज्यादा बचाऐं यह नुकसान हो सकता है पैसे का, समय का, मान–सम्मान का, समाज में सम्मान का, सुखों का, अपने प्रियों के वियोग का आदि।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

हर व्यक्ति का हर एक से कुछ न कुछ रिश्ता है, समबन्ध है। इस रिश्ते के मुताबित वह हर एक से चाहता है कि सामने वाला ऐसा हो जो कि उस रिश्ते का सर्वोत्तम रुप हो । भान्जा चाहता है कि मामा ऐसा हो जो सर्वोत्तम मामा होता है तथा मामा चाहता है कि भान्जा ऐसा हो जैसा सर्वोत्तम भान्जा होता है तथा हमेशा वे लोग दूसरे को वैसा बनाने की कोशिश में लगे रहते हैं तथा अपनी उम्मीदें पूरी करने के लिए तमाम लड़ते मरते हैं। काश वे दूसरे को वैसा बनाने की बजाए अपने को सर्वोत्तम बनाने का प्रयास करते। मामा अपने को सवोत्त्म मामा

बनाता व भान्जा अपने को सर्वोत्तम भान्जा बनाने का प्रयास करता तो दोनों का जीवन स्वर्ग हो जाता। जीवन के क्लेश मात्र इस ही बात के हैं। अतः आप जिस रिश्ते में है उसको सर्वोत्तम बनायें न कि दूसरा जिस रिश्ते में है उसको बनाने की कोशिश करें। आपका जीवन क्लेशों से रहित हो जाऐगा।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

जब आप भगवान के पास जाते हैं भगवान कभी नही देखते है आप कैसे है, आप जैसे भी हैं वे स्वीकार कर लेते हैं। जब भगवान जो इतने बडे हैं वे स्वीकार कर लेते हैं तो हम स्वीकार क्यों नही कर सकते। विचार करे आप शान्त तथा सुन्दर हो जाऐंगे। हम क्यों विचार करें कि हमारे पास जो आ रहा है कैसा है ।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

काश हम हमें जो मिल जाता है उसमें सन्तोष कर लें तथा और भी ज्यादा मिल जाऐ उसके लिए प्रयास करते रहें बजाय शिकायत करने के उसके लिए जो हमे नहीं मिल पाया है। यह है सकारात्मक दृष्टिकोण जो सिर्फ उन्नति के रास्ते खोलता है और अवनति (पतन) के रास्तों का बन्द ही रहने देता है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

सभी को घर में तथा कहीं भी इस प्रकार रहना चाहिए कि दूसरों को तुम्हें देखकर घिन्न न आऐ बल्कि तुम्हें देखकर उन सबका तुम्हें प्यार–दुलार करने का मन करे। इसके लिए चाहिए :–

- बालों को कंघी करके रखें।
- मुहँ धोकर साफ रखें अगर क्रीम आदि का प्रयोग कर सकते हैं तो और भी सुन्दर।
- दाँत साफ रखें।
- मुँह को खुशबुदार रखें कि कोई तुमसे बात करे तो आनन्द आए।
- कपडें साफ, सुथरें तथा प्रेस हुए वे पहनें नये लुक वाले पहनें, खिले–खिले पहनें।
- मीठी वाणी बोले।
- सुव्यवस्थित पहरावा रखें।
- अदापूर्ण बाते (अदाओं से भरपूर) करें।
- चुलबुली नजरे रखें।

तभी लोग तुम्हे चाहेंगे, तुम्हें प्यार करेंगे।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

स्वामी (Employer) एवं सेवक (Employee) का सम्बन्ध बहुत ही संवेदनशील है। सेवक धर्म निभाना बहुत कठिन है क्योकि इसको निभाने में निजी हित (स्वार्थ) एवं स्वामी का हित (स्वार्थ) प्रभावित होते है। अगर सेवक स्वामी का ख्याल रखता है तो अपना ख्याल नहीं रख पाता है तथा जब अपना ख्याल रखता है तो स्वामी का ख्याल नहीं रख पाता है। यह धर्म बस एक ही स्थिति (situation) में ठीक प्रकार से निभ पाता है कि जब स्वामी खुद ही सेवक का इतना ख्याल रखता है कि उसे अपना ख्याल रखने की आवश्यकता ही नहीं रहती है। विचार करें, राम जी बस ऐसा ही

करते थे तभी तो कहते हैं कि एक बार जो राम के शरणागत हो जाता है या जिसको वे अपना शरणागत मान लेते हैं उस दिन से उसकी सारी चिंताऐं मिट जाती है। क्योंकि वे तो अपने शरणागतो का, न केवल उनका खुद का बल्कि उनके परिवार का भी उनके कुटुम्ब तक का ख्याल रखते हैं।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

एक आदमी जब शादी करता है तो यह सामाजिक व्यवस्था है कि वह अपने को तथा अपने कुटुम्ब, माता पिता उसके आश्रितों की देखभाल की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेता है कि वह अपनी पत्नी की सहायता से अपने माता–पिता, अपने कुटुम्ब का ध्यान रखेगा उनकी देख भाल करेगा न कि वह उस दिन से पत्नी का हो जाता है। या न कि उस दिन से पत्नी को वह मिल जाता है। विचार करें आवश्यक है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

उपहार या भेंट एक ऐसा साधन है जो मनों को खुशी एवं प्रसन्नता देता है तथा कुछ समय जिस समय यह दिया जाता है जिस समय यह खोला जाता है देने वाले तथा लेने वाले दोनों के मन को अत्यन्त खुशी देता है। यही है कारण दीवाली जो खुशियों का त्योहार माना जाता है, जिसमें खुशियां मनायी जाती है, में उपहारों का, मिठाई का लेना–देना किया जाता है। इस प्रथा को ज्यादा से ज्यादा बढाऐं न कि घटाऐं क्योंकि यही सच्ची खुशी है आज आप दूसरे का मन खुश करेंगे तो वह कल आपका मन खुश करेगा। अपने जीवन में

खुशियों के ऐसे स्रोत बना–बना कर छोड दें पता नहीं कब ये तुम्हारे जीवन में किस रुप में वापिस आऐं। भगवान किसी का रखते नहीं है बल्कि ब्याज समेत लौटा देते हैं।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

अब अगर रामराज्य बनाना है तो राम जैसा तो बनना ही पड़ेगा। अब अगर राम जैसा बनना है तो राम जैसे काम, राम जैसा व्यवहार, राम जैसा खान–पान करना ही होगा। अब राम अगर फलाहारी हैं तो फलाहारी भी बनना पड़ेगा राम अगर सत्यनिष्ठ हैं तो सत्यानिष्ठ होना ही पड़ेगा, राम अगर दयालु हैं, क्षमाशील हैं अमीर हैं, प्यारे हैं, शरणागतों के रक्षक हैं त्यागी हैं, अधिकारात्मक हैं तो यह सब मुझको भी बनना ही पड़ेगा।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

वे लोग तो बहुत अच्छे हैं, अच्छे इन्सान हैं, धार्मिक हैं, बडप्पन रखते हैं, मगर बस एक गड़बड़ हो गयी है शायद इन्होनें कभी किसी के साथ बहुत किया है मगर अन्त में उसने इनको उसका श्रेय नहीं दिया। तो इनके मन में आ गया सब बेकार है किसी के साथ कितना ही कर लो कोई नहीं देखता और इन्होंने आगे से करना ही बन्द कर दिया बस यही एक गडबड़ हो गयी। भई जो अच्छा रास्ता है वह तो अच्छा ही है किसी एक ने उसे नहीं माना तो रास्ता क्यों बदल लिया एक के चक्कर में तुमने प्रशंसा, अच्छेपन के रास्ते ही क्यों बन्द कर दिये e.g. दीवाली पर किसी को कुछ न देना आदि। आपको अपने हिसाब से जितना भी सम्भव हो ज्यादा से ज्यादा उतना तो करते ही

रहना चाहिए। अगर आप यह कर रहे हो तो वह पहचाना जाएगा ही और अगर कोई नहीं पहचान पा रहा है तो वह समझ नहीं पा रहा है। जब समझ नहीं पा रहा है तो उसमें बहस की क्या बात है आप इन्तजार करो कि जब उसकी समझ में आ जाएगा वह खुद ही सराहेगा। इन्तजार करें फल तुरन्त न चाहे फल अपने हिसाब से आता है।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

बहुत से या ज्यादातर लोग अपना जीवन बस एक छोटी सी बात से खराब कर लेते हैं। अच्छा इसने मेरे बारे में बुरा कहा ये मुझे बुरा समझता है अच्छा ठीक है तो मैं अब बताऊँगा ठीक है बस अब मैं बुरा ही हूँ।

बस यहीं से गड़बड़ हो जाती है काश आप में बड़प्पन होता आप अपने को अच्छे से हटाकर बुरा न बना लेते। दूसरे को वैसा ही लगा होगा तभी तो वह ऐसा सोच रहा है जब उसे ऐसा लगेगा कि तुम अच्छे हो तो वह खुद ही अच्छा कहेगा। आज न कल तुम अच्छे लगने लगोगे अगर तुम अच्छे हो। कभी जल्दी समझ में आ जाता है तथा कभी समझ में आने में देर लग जाती है।

इस वजह से कि तुम दूसरे को सही नहीं लगे अपने को गलत मत बनाओ अपने को अगर गलत बना लोगे तब तो सिर्फ गलत ही लगोगे अपने को किसी दूसरे की वजह से भी गलत रास्ते पर मत डालो।

तुम क्यों चाह रहे हो कि वह तुम्हें वैसा कहे जैसा तुम्हे लगता है वह तो वही कहेगा जैसा उसे लगता है। वैसे भी अच्छा तो वह है जिसे दूसरे अच्छा कहते हैं। तुम ऐसा प्रयास करो कि दूसरे को तुम ऐसे लगने लगो।इस अच्छेपन को इस तारीक को लड़भिड़कर हासिल मत करो।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

ये लोग सिर्फ अपने से बडों का ही ध्यान रखते हैं उन्ही की परवाह करते हैं उनको खुश रखने का ही ध्यान रखते है। छोटों below the line का नहीं उनके लिए तो ऐसी ही सोच है इनका काम है हमारा ध्यान रखना हमें खुश करना।

गलत है छोटों से ही तुम बड़े बनते हो छोटे तुम्हारे शरणागत हैं वे जब तुम्हारी तरफ देखते रहते हैं जब उनकी उम्मीदें टूटती हैं तो उन्हें दुख होता है वे तुम्हारे राज्य को अस्त व्यस्त कर देते हैं।

तुम सिर्फ अपने से बड़ो की तरफ देखते हो जो तुम्हारी तरफ देखते भी नहीं हैं। जो आपको निराशा भी देते हैं।

अपने से छोटों की तरफ देखना उनको खुश रखना उन्हें प्यार करना ही रामपन है। जब आप में रामपन आ जाता है तो बड़े भी आपकी तरफ झुकना शुरु कर देते है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

दोस्ती ही जीवन की सच्ची खुशी है। आप ज्यादा से ज्यादा लोगों के, बुजुर्गो के, बच्चों के, हम उम्र लोगों के

दोस्त बनें तथा खुद को ऐसा बनाऐं कि ज्यादा से ज्यादा लोग तुम्हें अपना दोस्त बनाना चाहें। अगर आप ऐसा कर पाये तो शायद आप दुनिया के सबसे ज्यादा खुश इंसान होगें। जीवन की सारी खुशियां आपके ही पास हैं इन्हे महसूस करना शुरु करें। कोई भी आपको अपना दोस्त तब बनाता है जब आप दोस्ती को समय देते हैं, धन खर्च करते हैं। उपहार देते हैं, दोस्त को परेशानियों से बचाते हैं, दोस्तों से कभी लड़ाई नहीं करनी चाहिए दोस्तों को बराबर का समझना चाहिए। काश आप अपने परिवार के सदस्यों के दोस्त बनें अपने आफिस में सहकर्मियों के दोस्त बनें तो आप अकेले न रहेंगे।

ध्यान करें एवं विचार करें किन सबका आपकी जिन्दगी में दोस्त होना आवश्यक है किनके दोस्त न रहने से आपकी जिन्दगी स्वर्ग नहीं रहेगी या किनसे लडाई हो जाने पर जिन्दगी नरक हो जाएगी या जिन्दगी नीरस हो जाएगी। परिवार के लोग, रिश्तेदार, पडोसी, सहकर्मी आदि।

याद रखें दोस्ती में मिठास के लिए आवश्यक है दोस्त से कभी लडाई न होना, कड़वा न बोला जाना। बहुत आसान है लगातार किये जाने से आप ऐसा कर पाने में होशियार हो जाऐंगे।

अगर आपने ऐसा किया तो निश्चित रुप से यह सत्य है

आपकी जिन्दगी खुशियों से भर जाएगी।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

सब मन मिले का मेला है। मन मिलाएं तथा मजा लें जिन्दगी का बड़ा ही आसान तरीका है मन मिलाने का दूसरों के मन की जानें तथा मन की बात बताएं तथा मन को पवित्र एवं सच्चा रखें आपका मन अगर पवित्र एवं सच्चा होगा तो आपके पास कोई ऐसी बात ही नहीं होगी जो दूसरो को न बतायी जा सके आपके चिन्ता ही नहीं रहेगी आपको खतरा ही नहीं रहेगा कि कोई आपके मन की बात का दुरूपयोग कर लेगा तथा आय शीशे की तरह साफ हो जाऐंगे। जैसे–जैसे आप सबों के मनों का एकाकार होगा जिन्दगी खुशियों से भर जाएगी। आओ सभी से मन मिलाएं और मस्त हो जाएं मन मिलाना तभी सम्भव है जब आप सभी को सच्चा तथा भगवान का अंश मानेंगे तथा ऐसे ही उनके प्रति क्षमाशील रहेंगें जैसे कि भगवान हमारे साथ रहते है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

मैं तो समझता हूँ कि जो हमारा हाथ दबा लेता है उसके लिए तो सभी करते हैं करना तो वह है जब हम उसके लिए करते है जो बड़ा अच्छा है, हमारा हाथ नहीं दबाता है।

कहते हैं यह सब सतयुग की बातें हैं आज कलयुग है मैं कहता हूँ कि दूसरा भी सतयुग की बातें कर रहा है जो आपका हाथ नहीं दबा रहा है, तो आप सिर्फ कलयुग ही क्यों देख रहे हो सतयुग को क्यों नही देख रहे हो आप कलयुगीयों के साथ मिलकर कलयुगीयों को

क्यों बढ़ा रहे हो। जबकि आप काम सतयुगीयों के सहारे ही कर पा रहे हो। सही मायने में कलयुगी चल ही सतयुगीयों के सहारे रहा है। कलयुग और सतयुग तो हमेशा ही साथ रहता है अगर हम सतयुगी व्यवहार रखते हैं, सतयुगी सोच रखते हैं तो चारों और सतयुग दिखायी देता है तथा अगर कलयुगी व्यवहार रखते है तो चारों ओर कलयुग दिखायी देता है।

मैं कहता हूँ कि आपको अपना व्यवहार सतयुगी रखना चाहिए तथा बस कलयुगियों के द्वारा अपने को हानि पहुँचा सकने से बचाना चाहिए तो सतयुग बढ़ता जाएगा एवं कलयुग घटता जाएगा और जब आप कलयुगियों से डरते ही नहीं हैं। कि हमें कौन हानि पहुँचा सकता है फिर तो निश्चित ही आप कलयुग के साथ क्यों हो सतयुग के साथ क्यों नही हो। सतयुग को ही बढ़ाओं बूंद–बूंद से घड़ा भरता है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

भगवान ने आपको व्यवहारिक तथा होशियार इसलिए पैदा किया है कि आप दूसरों की समस्याओं को संवार करके उसको सुखी कर सको। न कि इसलिए कि आप सिर्फ अपनी निजी स्वार्थ के लिए ही अपनी योग्यताओं का प्रयोग करो न कि दूसरों को गडढ़े में धकेल कर अपने को उबारने के लिए। अगर आप दूसरों को गडढ़े में से निकालते रहेंगे तो आपके व्यवहार का तथा आपकी योग्यताओं का सदुपयोग है।

अपनी योग्यताओं का प्रयोग कभी भी अपने को परेशानी से बचाने के लिए या अपने निजी स्वार्थ के लिए दूसरों को परेशानी में डाल देने के लिए कभी नहीं होना चाहिए बल्कि होना चाहिए दूसरों तथा स्वयं को परेशानीयों से निकालने के लिए इन दूसरों में सभी Peon, Clerks, Manager, Partners, Clients, Self सभी आते हैं। हमें हमेशा सिर्फ सभी को परेशानियों से निकालना चाहिए तथा कभी भी किसी के लिए भी परेशानी खड़ी नहीं करनी चाहिए। किसी के लिए भी निर्देश देने से पहले हमें अपने को उस जगह रखकर अवश्य सोचना चाहिए ताकि सिर्फ सच्चे निर्देश ही हों अगर ऐसा होगा तो हमेशा आपकी व आपके निर्देशों की कद्र होगी।

जब आप कलयुगी हो नहीं कलयुगियों से आप डरते नहीं कि वे आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकते तो आप सतयुगी रास्ते पर चलने वाले इन्सान हो यह कहते हुए डरते क्यो हो। निर्भीकता से इसे अपनाते क्यों नही हो। भगवान तथा आपसे जुड़े हुए सभी लोगों का भी आपके साथ–साथ भला हो जाएगा।

सास बहु के झगड़े :- यह ठीक बिल्कुल ऐसे ही है कि एक आदमी अपना मन साफ सुथरा कर कराकर बैठा हुआ था, दूसरा आया जिसके मन में गन्द भरी हुई थी, और उसने लाकर उसे तुम्हारे मन पर बिखेर दिया तथा मन गन्दा कर दिया। यह बिल्कुल ठीक वैसे ही है जैसे कि एक मॉ अपना धर बड़ा साफ सुथरा करके बैठी,

उसका छोटा सा बच्चा, गोद का बच्चा, लाड़ला सा बच्चा आया और उसने पेशाब कर दिया या सामान बिखेर दिया। आप देखते हो और परेशान हो जाते हो मगर हंसते हो तथा उसे प्यार से दुलारते हो तथा फिर से साफ कर देते हो।

ऐसे ही मनों का है, अब या तो आप अपना हंस लो, मुस्करा लो तथा फिर साफ कर दो या इस गन्दगी को उठाकर उसके मन पर फेंको वो तुम्हारे मन पर फेंके तुम उसके मन पर तो मनों का बूचड़खाना हो जाता है। वरना बच्चों का खेल, बच्चे से खिलन्दरी ।

सभी से प्रार्थना है कि अपने तथा दूसरों के मनों को खुश रखें। खुश करें किसी के भी या अपने मन को ठेस न पहुचाऐं।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

राजा को राज्य ऐसे संभालना चाहिए जैसे भरत जी ने राम जी का राज्य संभाला था जब राजा राज्य को भरत जी की तरह संभालता है तो राम जी वहां प्रजा को सुखी बनाने के लिए वहां के राजा को राम बनाने के लिए खिचें चले आते हैं। प्रयोग करके देखो।

राजा को चाहिए अपनी सोच को भरत जी जैसी सोच बनाना। हर चीज को इस नजरिये से देखना कि राम जी के राज्य का नुकसान न हो जाए, राम जी का नाम बदनाम न हो जाए, ठीक इस ही नजर से क्योंकि राम

जी ने इस राजा को अपने राज्य के एक हिस्से का राजा बनाया है।

1. अपने अधीनस्थों को अच्छी–अच्छी शिक्षाएं लगातार देता रहे उनको दुर्लभ ज्ञान, काम करने के संभालने के अच्छे–अच्छे तरीके लगातार सिखाता रहे।

2. राज्य की हर चीज की (सामान, सेवाएं, सेवक, प्रजा, ग्राहकों, सम्पत्तियों) का बड़े सद्भाव तथा सद्नीयत से ध्यान, नजर रखता रहे ताकि राम जी उसके राज्य चलाने के तरीके की सराहना कर सकें, इन पर गर्व कर सकें।

3. राजा को चाहिए की वह सदपुरुषों की क्योंकि उन्हीं में भगवान बसते हैं तन, मन, धन से उनकी सेवा करता रहे ताकि उन सद्पुरुषों के सदगुण से राज्य गुणवान होता रहे तथा ये सदगुण राज्य में घर कर जाऐं, तथा यहां सदगुणों को भण्डार भर जाऐ।

4. राजा को चाहिए कि वह अपने हर अधीनस्थ में, अपने हर ग्राहक में, अपने हर सम्बन्धित व्यक्ति में भगवान को देखे क्योंकि राजा को उसका राज्य जो भगवान ने ही दिया है को अच्छी तरह चलाने के लिए, क्योंकि ये सब उसे भगवान ने दिए हैं कहीं ऐसा न हो कि ये भगवान के पास जाकर राजा की शिकायत करें कि भगवान ने उन्हें कैसे राजा के पास भेज दिया। उसे हमेशा कोशिश करते रहना चाहिए कि उससें कहीं ऐसी कोई गलती न हो जाए।

मन–भगवान एवं प्रेम : जिसमें भगवान दिखता है उससे प्रेम होने ही लग जाता है। प्रेम उसी से होता है जिसमें परमात्मा दिखता है। आप ऐसे बनें कि आप में परमात्मा दिखाई दे फिर देखें आपसे कितना प्यार करेंगे लोग या वे लोग जिनको आप चाहते हैं कि वे आपको प्रेम करें। अर्थात मन, परमात्मा, प्रेम का सीधा सम्बन्ध है मन मिलता है तो प्रेम होता है तुम्हारा मन परमात्मा के मन जैसा है तो ये क्योंकि सब के मन परमात्मा है जब परमात्मा हो जाता है तो एकाकार हो जाता है मनों का।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

स्त्री मन उसको प्यार करता है जो कि उसे दुनिया में सबसे ज्यादा प्रेम करता है मतलब अपने से भी ज्यादा। स्त्री को लगना चाहिए कि उसका प्रेमी उसे इतना प्यार करता है कि उसके लिए अपनी प्रेमिका की इच्छा पूरी करने से ज्यादा महत्वपूर्ण दुनिया में कोई दूसरा काम नहीं है जो अपनी प्रेमिका की कल्पनाओं को साकार करता है। और अगर साथ में उसकी कल्पनाओं को और भी पंख लगवाता है अर्थात ऊँची बनवाता है तो यह हो जाता है सोने में सुहागा। अगर प्रेम पाना है तो यह सब करना होगा।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

हमेशा ध्यान रखो जब जहां तुम जिस स्थिति में हो उसके नियमों एवं मर्यादाओं का पालन करो अगर करोगे तब ही तुम खुश रहोगे तथा दूसरा भी खुश रहेगा।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

मेहमान, धर वाले एवं मेहमान बाजी :

- मेहमान का वहीं जाने का मन करता है जहां उसको सम्मान, प्यार तथा अपनापन मिलता है।
- मेहमान का मन बड़ा खुश होता है जब उसे मेहमान नवाजी मिलती है तथा उसका वापिस जाने तक का मन नहीं करता तथा जी करता है कि यहीं रुक जांऊ। मगर उसे सीमा से ज्यादा रुकना नहीं होता है अगर रुकेगा तो पूरा खतरा है आगे अपमान का, तिरस्कार का क्योंकि मेहमान नवाजी तो थोड़ी बहुत ही हो पाती है ज्यादा नहीं तथा अगर ज्यादा उम्मीद की जाती है तो वह घर वालों पर बोझ बन जाती है तथा उन्हें चिड़चिड़ा कर देती है।
- रोज–रोज का मेहमान भी अच्छा नहीं लगता है उसे देखते ही घर वाले मन मन में मुंह बनाने लगते हैं आप उस स्थिति से बचें।
- समय से आने वाला मेहमान ही भाता है तथा बेसमय आने वाला मेहमान भी उपेक्षा का कारण बनता है जब तक कि आने वाले मेहमान की कोई अत्यधिक मजबूरी नहीं है जो अगर कभी–कभी आ पड़ती है तो निभा ली जाती है। मगर रोज रोज की मजबूरी से घर वालों का कोई लेना देना नहीं होता है।
- मेहमान वह भी बुरा लगने लगता है जो कि घर

की चीजों को घर वालों की इच्छा के विरुद्ध या अपनी इच्छानुसार छेड़ने लगता है या छूने लगता है मेहमान हमेशा मर्यादाओं में बैठा हुआ तथा अतिथि सत्कार पाता हुआ मर्यादाओं में बातें करता हुआ ही अच्छा लगता है।

- घर वालों का घर की चीजों में मन बसता है वह उन्होनें अपने मन के अनुसार रखी हुई होती हैं अगर कोई भी उन्हें छूता या छेड़ता है तो उन का मन छिड़ जाता है अब घर वाले तो यही चाहेगें कि अपने घर में वे अपने मन के अनुसार रहें न कि मेहमान के मन के अनुसार।

हाँ यह जरुर है कि अच्छे मेहमानबाज अपने मेहमान की खुशी का इस कदर ध्यान–ख्याल करते है कि उसकी खुशी के लिए अपने घर की चीजों तक को मेहमान की पसन्द के अनुसार लगाते हैं उसकी पसन्द के कपड़े पहनते हैं, उसकी पसन्द का नाश्ता खाना बनाते हैं।

मगर तो भी यह नहीं चाहते कि मेहमान आए और उसके घर की चीजों को अपनी पसन्द के अनुसार छेड़ने लगे या घर वालों की अपनी पसन्द में कमी निकालने लगे। अपितु ठीक इस ही प्रकार घर वाले भी चाहते हैं कि मेहमान भी जब आए तो वह घर वालों की पसन्द का ध्यान रखें उसकी पसन्द की तारीफ करें उनकी पसन्द का सामान लाए आदि।

आप से हमारी अपेक्षाऐं :–

1. कहते हैं रामायण में लिखा है कि सत्संग के बिना 'राम' नहीं मिलते। सत्संग का मतलब सन्तों का संग, 'रामराज्य आहवाहन मिशन' को एक संत मानें तथा ऐसी व्यवस्था बना लें कि निरन्तर उसका आपके जीवन में संग बना रहे, आपकी गहृस्थी या कोई विचार उलझे तो यह आपकी उसको श्रीराम बुद्धि के अनुसार सुलझाने में मदद करे।
2. आप भी अन्य सब लोगों के लिए सत्संग बनें तथा उनको भी इस सुन्दर सी राह पर रखें कहते हैं जो बोओगे वही काटोगे, जो दोगे वही पाओगे, अपने आस–पास, अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों की बुद्धि को भी सुन्दर बुद्धि बनाने का प्रयास करें।
3. आप इस मिशन पर विश्वास करें कि यह सच्चा है क्योंकि यह सिखाने निकला है सच की राह, सच्ची सच की राह क्योंकि अन्त भला तो सब भला और अंत में तो जीत सच की राह की ही होती है तथा लम्बे समय तक तो सच ही टिकता है, सच कभी परेशानियां नहीं देता, यह हमारा भ्रम है बस सिर्फ हमें लगता है मगर यह हमेशा के लिए हमें आने वाली परेशानियों से बचा लेता है। सीखें 'सच्ची सच की राह'।
4. आप अपने साम्राज्य, राज्य, घर, दुकार में एक सुबह की, और एक शाम की पूजा (प्रार्थना) अवश्य करें जिसमें अपने धर्मानुसार इस ब्रह्माण्ड की सर्वोच्च शक्ति 'परमात्मा' के लिए दीपक जलाऐं उनकी आरती करें उनका ध्यान करें, उनसे प्रार्थना करें। कोशिश करें आपके राज्य के सभी लोग यथा सम्भव, सुखानुसार उसमें शामिल हों, शरिक हों ताकि हम और हमारे राज्य के सभी लोगों को, क्योंकि यह राज्स परमात्मा की रोज नियम से पूजा, प्रार्थना करता है, परमात्मा की कृपा पाने के अधिकारह हो सकें, राजा का कर्तव्य है ऐसी व्यवस्था बना देना।
5. राजा का कर्तव्य है कि कहीं भी लोगों के मनों में कोई दबे हुए शिकवे, शिकायत न रहें जो Communication Gap से हो जाते है व्यवस्था बनायें। सम्भव है तो रोज खाने पर, पूजा

पर, या साप्ताहिक किसी खेल को आयोजन करके या एकविशेष भोजन पर सब लोग साथ बैठें ताकि सभी के मनों का मेल हो क्योंकि 'सब मन मिले का मेला' है।

6. हम श्री राम के उस रूप का जो कि वह अपने शरणागतों पर लुटाते थे, अपने सेवको पर लुटाते थे, अपने आश्रितो पर लुटाते थे का अनुसरण करें, बस हम श्री राम के काम में हाथ बटायें (क्योंकि उनका काम तो रामराज्य बनाना ही था) क्योंकि सभी जीव भगवान पर आश्रित है, तथा भगवान का काम है अपने आश्रितों, शरणांगतो, भक्तों का ध्यान रखना उन्हें दुःखों से बचाना, हम भगवान के इस सुन्दर काम में उनका हाथ बटायें और उन्हें (भगवान को) अपना आभारी बनायें।
7. अहिंसा का रास्ता अपनाऐं केवल शारीरिक अहिंसा ही नहीं बल्कि मानसिक अहिंसा भी। अगर आपने मानसिक अहिंसा करना सीख लिया तो यह दगा आपको सबका प्यार आपके राज्य (घर) में प्यारपूर्ण वातावरण बन जाएगा। मानसिक अहिंसा मतलब किसी के मन को न कचले बल्कि हो सके जो कोशिश करें वह करने की, जिससे कि आपके राज्य के सदस्यों तथा अन्यों के मन खुश हों सके।
8. ध्यान रखे अगर आप सबों को खुशी दे रहे हैं तो अपने (स्वयं) को भी खुशी ही दें, अरे भाई आप का अपने पर हक औरों के हक से ज्यादा ही होना चाहिए फिर कम क्यों, Balance करें, हो जाता हैं।
9. आप मिशन के कार्य में यथा सम्भव सभी प्रकार के जो भी सम्भव है, सहयोग प्रदान करें मगर ऐसा सहयोग जिससे आप गर्व महसूस करें और आपको खुशी मिले ताकि हमारा मिशन अपने उद्देश्य में कामयाब हो सके। कहते हैं तु भगवान के राक्ते पर चल कर तो देख तेरे लिए सारे रास्ते न खोल दूँ तो कहना, तु मेरे लिए आंसू बहा के ता देख मैं तेरी सारी दुनिया अपनी न बना दूं तो कहना, तू मेरे लुटा के तो देख, मैं तेरे पर खजानों का ढ़ेर न लगा दूं तो कहना, तु मुझे अपना बना के तो देख मै हर एक को तेरा अपना न बना दूं तो कहना